प्रेस विज्ञप्ति

साहित्य अकादेमी द्वारा डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की 127वीं जन्म जयंती के अवसर पर

हाशिये के स्वर : भारतीय दलित साहित्य

विषयक परिसंवाद संपन्न

दलित आंदोलन और दलित साहित्य संपूर्ण रूप से भारतीय है – माधव कौशिक

समाज में सामंजस्य लाने की आवश्यकता है – लक्ष्मण गायकवाड

डॉ. अम्बेडकर को समग्रता में समझना जरूरी – सुभाष गाताडे

दलित साहित्य शिल्प की नहीं कथ्य की चिंता करता है – बजरंग बिहारी तिवारी

नई दिल्ली। 14 अप्रैल 2018। साहित्य अकादेमी ने डॉ. बी.आर. अम्बेडकर की 127वीं जन्म जयंती के अवसर पर ''हाशिये के स्वर : भारतीय दलित साहित्य'' विषयक परिसंवाद आयोजित किया। परिसंवाद का उद्घाटन वक्तव्य प्रख्यात मराठी लेखक लक्ष्मण गायकवाड ने दिया। उन्होंने कहा कि समाज में सामंजस्य स्थापित किए जाने की आवश्यकता है। जंगल, जमीन और पानी पर अगर दलितों का अधिकार नहीं तो उनके लिए आजादी का क्या मतलब है। आगे उन्होंने कहा कि अभी भी लाखों घुमंतू समुदाय के दलित लोग आजादी से वंचित हैं। उनको लेकर अलग–अलग मंचों से चिंताएँ तो बहुत व्यक्त की जाती हैं लेकिन कोई ठोस बदलाव आता नहीं दिख रहा है। अभी भी हमने दलितों को अपना सहयोगी या हिस्सेदार नहीं बनाया है। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रख्यात लेखक एवं विद्वान सुभाष गाताडे थे। उन्होंने दलित साहित्य पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि इस साहित्य ने भारतीय साहित्य के ''मयार'' बदले हैं। उन्होंने कहा कि डॉ. अम्बेडकर के विचारों को महत्त्व देने की अधिक आवश्यकता है। डॉ. अम्बेडकर की पहचान केवल दलित नेता के रूप में नहीं बल्कि मानवधिकारों के लिए संघर्ष करने वाले महत्त्वपूर्ण नेता के रूप में की जानी चाहिए। उनकी समग्र मेधा को पहचानने और जानने की जरूरत है। उन्होंने सभी लेखकों और आलोचकों से अनुरोध किया कि डॉ. अम्बेडकर की कोई एक छवि गढ़ने की बजाए उनके विविधतापूर्ण कार्यों को सभी के सामने प्रस्तुत करना चाहिए। अपने बीज वक्तव्य में बजरंग बिहारी तिवारी ने कहा कि दलित साहित्य ने शिल्प की चिंता नहीं की है। बल्कि उसके लिए कथ्य ज्यादा महत्त्वपूर्ण था। उन्होंने प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल के उन लेखकों का परिचय दिया जो जीवन के बुनियादी अधिकारों के लिए साहित्य लेखन कर रहे थे। उन्होंने दलित साहित्य के मूल चिंतन को न्याय की स्थापना के लिए प्रयासरत बताते हुए कहा कि भक्ति काल में रविदास, कबीर, दादू दयाल एवं देव आदि न्याय के पक्ष को प्रस्तुत करते हैं। बाद में निराला, नागार्जुन और मुक्तिबोध इस परंपरा को आगे बढ़ाते हैं। उन्होंने क्षोभ, विक्षोभ, आक्रोश अनुभव और अधिकार तथा संक्षोभ के सूत्रों के माध्यम से दलित साहित्य के विभिन्न पड़ावों को व्याख्यायित किया। उन्होंने कहा कि दलित आंदोलन और साहित्य अब विचारधारा से लैस है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के उपाध्यक्ष माधव कौशिक ने कहा कि दलित विमर्श पूरी तरह हमारा स्वदेशी विमर्श है और इसको हमें गंभीरता से अपनाना होगा। उन्होंने कहा कि दलित साहित्य ने 'अनगढ़ता का नया सौंदर्यशास्त्र' रचा है जिसका मूल तत्त्व 'श्रम' है। उन्होंने कहा कि दलितों के प्रति समाज का नजरिया बदला तो है लेकिन अभी भी उसे बहुत और बदलना है तभी हम एक आदर्श समाज की स्थापना कर पाएँगे। कार्यक्रम के प्रारंभ में साहित्य अकादेमी के संपादक अनुपम तिवारी ने सभी का स्वागत किया और साहित्य अकादेमी द्वारा दलित साहित्य को प्रोत्साहित करने के लिए किए जा रहे प्रयासों के बारे में बताया।

कार्यक्रम के प्रथम सत्र का विषय ''वर्चस्व का विरोध : दलित संदर्भ'' था जिसकी अध्यक्षता जी. लक्ष्मी नरसैया (तेलुगु) ने की और हेमलता महिश्वर (हिंदी), सरबजीत सिंह (पंजाबी) और के. अनिल (मराठी) ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किए।

द्वितीय सत्र का विषय ''अम्बेडकर की दृष्टि और दलित साहित्य का अभ्युदय'' था। इस सत्र की अध्यक्षता उर्मिला पवार ने की और इसमें मूलचंद गौतम (हिंदी), छाया कोरेगाँवकर (मराठी) और कर्मशील भारती (हिंदी) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।